पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.12.2012 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

251 कुण्डीय विराट यज्ञ की तैयारी हेतु

विशाल आर्य कार्यकर्ता बैठक

रविवार 30 दिसम्बर 2012

प्रात: 11 बजे से 1:30 बजे तक

आर्य समाज, दीवान हाल, चांदनी चौक

दिल्ली-110006

अध्यक्षता:

श्री कृष्णगोपाल दीवान

सभी आर्य युवक, आर्य बन्धु समय पर पहुंचे

भवदीय

डॉ. अनिल आर्य	डॉ. रविकान्त	महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री

वर्ष-29 अंक-14 पौष-2069 दयानन्दाब्द 189 16 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2012 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.12.2012, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

मेरठ में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का प्रान्तीय कार्यकर्त्ता सम्मेलन सम्पन्न

देश की विषम परिस्थितियों में आर्य युवको को अहम भूमिका निभानी होगी- स्वामी विवेकानन्द जी

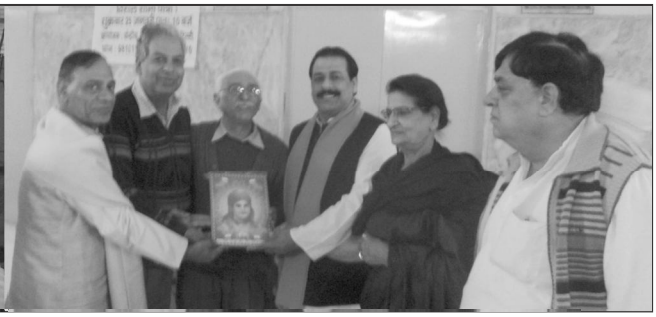

शनिवार 8 दिसम्बर 2012, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश की प्रान्तीय कार्यकर्त्ता बैठक आर्य समाज, थापर नगर, मेरठ में प्रान्तीय अध्यक्ष श्री आनन्द प्रकाश आर्य की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी (प्रभात आश्रम) ने आहवान् किया कि देश की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य युवको को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस दिशा में आर्य युवक परिषद् का प्रयास सराहनीय है। अत: मेरी अपील है कि सभी संगठन का सहयोग करें। उपरोक्त चित्र में स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, श्री राम कुमार सिंह, श्री सुशील शर्मा (शामली) व श्री आनन्द प्रकाश आर्य (हापुड़)। द्वितीय चित्र में समाज के प्रधान श्री सुभाष मल्होत्रा को सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य व डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, श्री राजेश सेठी (मन्त्री), श्रीमती कैलाश सोनी (प्रधाना) व प्रान्तीय महामन्त्री श्री प्रवीण आर्य। श्री नरेन्द्र आर्य (मन्त्री, उप सभा गाजियाबाद), श्री सुभाष सिंघल (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, गाजियाबाद), श्री सलेक चन्द आर्य, श्री वीर सिंह भावुक (सहारनपुर), कै. अशोक गुलाटी (नोएडा), श्री शिशु पाल आर्य, श्री पवन कुमार विश्नोई, श्री जितेन्द्र आर्य (खानपुर) आदि ने अपने विचार रखें।

॥ ओ३म् ॥

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

के तत्वावधान में

स्वतन्त्रता सेनानी, आर्य संन्यासी, समाज सुधारक

86 वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

रविवार, 23 दिसम्बर 2012, प्रातः 10 बजे

मुख्यमन्त्री निवास

3, मोतीलाल नेहरू पैलेस, जनपथ, नई दिल्ली-110001

मुख्य अतिथि

माननीया श्रीमती शीला दीक्षित

(मुख्यमन्त्री, दिल्ली सरकार)

विशिष्ट अतिथि

माननीय डॉ. योगानन्द शास्त्री

(अध्यक्ष, दिल्ली विधानसभा)

माननीय श्री बृजमोहन लाल मुन्जाल (चेयरमैन, हीरो मोटोकार्प)

अध्यक्षता

आर्य नेता डॉ. अशोक कुमार चौहान (अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

अभिनन्दन

डॉ. सत्यपाल सिंह (कमिश्नर, मुम्बई पुलिस)

विशेष उपस्थिति

★ श्री दीपक भारद्वाज ★ श्री दर्शन अग्निहोत्री ★ श्री सुरेन्द्र कोहली
★ श्री नवीन रहेजा ★ चौ. ब्रह्मप्रकाश मान ★ श्री राजीव कुमार 'परम'
★ श्री के.एस.यादव ★ श्री जितेन्द्र नरूला ★ डॉ. डी.के.गर्ग

आप सादर आमन्त्रित हैं

-: निवेदक :-

डॉ० अनिल आर्य	आनन्द चौहान	महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री

नोटः- कृपया अपना स्थान प्रातः 9.45 पर ग्रहण कर लें सम्पर्क : 9810117464

जीन्द में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

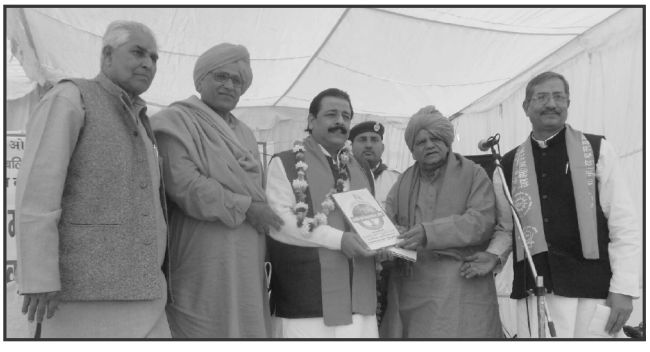

रविवार 9 दिसम्बर 2012, हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, अर्बन एस्टेट पार्क, जींद में सौल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य को सम्मानित करते संयोजक स्वामी रामवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, श्री मायाप्रकाश त्यागी, व परिषद् के महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई। सभा को स्वामी ओमवेश जी, ब्र. दीक्षेन्द्र, बहन पूनम, प्रवेश, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, स्वामी सौम्यानन्द जी, श्री कुलदीप आर्य, श्री सहदेव बेधड़क आदि ने सम्बोधित किया।

स्वामी आर्य वेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि ''आर्य समाज को शराबबन्दी, मांसाहार के खिलाफ आन्दोलन चलाना पड़ेगा। आज हरियाणा में जगह-जगह शराब की नदियां बह रही हैं। किसी समय कहा जाता था कि ''देशो में देश हरियाणा, जहां दूध दही का खाना।'' लेकिन आज शराब पीकर हजारों नौजवान अपनी जवानी को बर्बाद कर रहे हैं। स्वामी रामवेश ने घोषणा कि हम पूरे हरियाणा में शराबबंदी आन्दोलन चलायेगें।

'श्राद्ध' का यथार्थ स्वरूप

- मनमोहन कुमार आर्य

जब भी कोई चीज पुरानी होती है तो उसमें विकार एवं परिवर्तन आ जाते हैं। इन विकारों के कारण उसका वास्तविक स्वरूप विलुप्त हो जाता है। ऐसे समय में मनीषी एवं विवेकी पुरूष ही विकारों को पहचान पाते हैं और उसके यथार्थ व वास्तविक स्वरूप को जन सामान्य में प्रकट करते हैं। ऐसा ही उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भी हुआ। सन् 1824-75 के समय में हमारा प्राचीन वैदिक धर्म अपना मूल स्वरूप खो चुका था। उस यथार्थ वैदिक धर्म का स्थान पौराणिक अथवा हिन्दू मत या सम्प्रदाय ने ले लिया था। इसे पौराणिक या हिन्दू धर्म के नाम से भी पुकारा जाता है। हमें लगता है कि धर्म से पूर्व या तो मानव धर्म होना चाहिये अथवा वैदिक धर्म का प्रयोग ही उचित है। प्राचीन शुद्ध आचरणों व कर्तव्यों के लिए धर्म के पूर्व सनातन शब्द का प्रयोग भी किया जा सकता है। परन्तु यदि यही शब्द किसी पश्चातवर्ती मत या सम्प्रदाय या प्राचीन धर्म के विकृत स्वरूप, आचरणों व कर्तव्यों के साथ प्रयोग किया जाता है तो सनातन शब्द का इस प्रकार से प्रयोग स्वीकार नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार धर्म से पूर्व हिन्दू, पौराणिक या अन्य शब्दों का प्रयोग भी उचित नहीं है। अतः धर्म शब्द के वास्तविक स्वरूप पर विचार कर लेना उचित होगा।

आईये देखते हैं कि धर्म शब्द का प्राचीनतम् प्रयोग कहां और किस अर्थ में हुआ है और क्या धर्म का प्राचीन अर्थ वर्तमान समय में भी व्यवहृत है अथवा नहीं। धर्म शब्द का मुख्य अर्थ किसी पदार्थ का वह गुण होता है जो उसमें सदैव निहित या वर्तमान रहता है। यदि वह गुण उस पदार्थ से पृथक हो जाये तो उस पदार्थ का स्वरूप बदल जायेगा और उसमें जो नये गुण होगें उसी के अनुसार उसका नामकरण या संज्ञा होगी। अग्नि का गुण गर्मी देना, प्रकाश देना, जलाना आदि है। इसी प्रकार जल का मुख्य गुण शीतलता, मनुष्य या पशु-पक्षियों की पिपासा को शान्त करना आदि हैं। जब हम मनुष्यों के सन्दर्भ में धर्म की बात करते हैं तो धर्म का अर्थ होता है मनुष्य का आचरण। आचरण में जो करणीय आचरण हैं, वह धर्म है और जो करणीय नहीं हैं, वह अधर्म है। संसार के सभी देशों के मनुष्यों की रचना व उत्पत्ति का तरीका समान है। इससे एक तो यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी मनुष्यों का रचयिता व ईश्वर एक है। दूसरा यह भी कि उन सबका कर्तव्य अर्थात् धर्म भी एक ही होना चाहिये। आचरण एवं कर्तव्यों की परस्पर भिन्नताओं का समाज के विद्वानों व आचार-शास्त्रियों को, ज्ञान व निष्पक्षता से, समाधान करना चाहिये और सभी को उनको मानना चाहिये। यह समाज शास्त्री वस्तुतः धर्म के संशोधक व धर्म के रक्षक होते हैं। आजकल के समाज शास्त्री सामाजिक मान्यताओं, आचरणों व कर्तव्यों के संशोधन का कार्य न करने के कारण अपना दायित्व ठीक से पूरा नहीं कर रहे हैं। आज का समाज शास्त्र ऐसा है कि किसी भी मत-सम्प्रदाय की किसी भी गलत मान्यता के बारे में कुछ न कहा जाये। संसार में सभी मानते हैं कि मनुष्यों को सत्य बोलना, सत्याचरण करना 'धर्म' और झूठ बोलना या असत्याचरण करना 'अधर्म' या गलत है। इसी प्रकार दूसरों को ज्ञान देना, सहायता करना, असहायों की सेवा व सहायता, निर्बलों की रक्षा, अत्याचारियों का नाश व ह्रास, सज्जनों की रक्षा, सहायता व सेवा आदि सभी मत-सम्प्रदायों में स्वीकार किये जाते हैं। यही वास्तविक धर्म है। इनके विपरीत व परस्पर भिन्न, सभी करणीय व अकरणीय बातें, धर्म या अधर्म हैं। यदि वह मनुष्यों व सम्पूर्ण प्राणि जगत के लिए लाभकारी हैं तो वह धर्म हैं और यदि वह ऐसी नहीं है तो उनकी अधर्म संज्ञा होगीं। यदि किसी भी मत या सम्प्रदयाय में प्राणियों के प्रति किसी भी रूप में हिंसा का भाव है या दिखाई देता है तो वह अनुचित व अधर्म कोटि में आयेगा भले ही उसे माना जाता हो। उसी प्रकार आवश्यकता से अधिक व अनुचित तरीकों से धनोपार्जन करना भी अधर्म की श्रेणी में आता है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए किया गया कार्य भी अनुचित है। यदि निःस्वार्थ भाव से कोई भी कार्य किसी के व्यक्तिगत, सामाजिक या देश हित में किया जाता है तो वह स्वतः धर्म की श्रेणी में आता है।

अतः हमने धर्म को जान लिया है। मत व सम्प्रदाय इनसे भिन्न होते हैं। मत व सम्प्रदाय को कोई मनुष्य या इसी प्रकार का ऐतिहासिक व्यक्ति आरम्भ करता है। हो सकता है कि मत व सम्प्रदायों की अधिकांश बातें सत्य हों व धर्म की श्रेणी की हों परन्तु यह पाया जाता है कि मत व सम्प्रदायों की सभी बातें सत्य या धर्म कोटि की नहीं होती। उनमें कहीं न कहीं अज्ञान व गुप्त व लुप्त स्वार्थ भी होता है जिसे सामान्य जन जान नहीं पाते। बहुत दिनों तक उनके चलने पर फिर वह मत की आवश्यकता हो जाते हैं। अज्ञानता व स्वार्थों के कारण उस मत के अनुयायी उन्हें छोड़ नहीं पाते जिसका एक कारण उस मत के अस्तित्व को खतरा पैदा होने की आशंका का होना भी है और दूसरा उसके मत के प्रवर्तकों व नेताओं आदि के स्वार्थों को हानि पहुंचना होता है। सभी मतों में ऐसा होना आम बात है। परीक्षा करने पर वैदिक मत ही ऐसा मत सिद्ध होता है कि जिसमें असत्य कुछ भी नहीं है। वैदिक मत ही स्वयं में पूर्ण मत व धर्म हैं जिसमें मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त एवं मृत्यु के बाद मोक्ष व मुक्ति तक के करणीय आचरणों का वैज्ञानिक व तर्क संगत ज्ञान है। अन्य मतों में मुख्यतः मोक्ष व मुक्ति के बारे में जो ज्ञान है, वह वैदिक मान्यताओं की तुलना में हेय है। वैदिक धर्म एक मात्र मत है कि जो दुनियां के लोगों को आमंत्रित करता है कि वह इसकी सभी मान्यताओं पर विवेचना करें एवं अपनी आशंकाओं का निवारण प्राप्त करें। यह बात अन्य मतों में नहीं है। इस कारण यह मत ही दुनिया के सभी लोगों के लिए करणीय, माननीय एवं आचरणीय है।

मृतकों को भोजन व वस्त्र आदि की आवश्यकता नहीं है। अतः उनका किसी प्रकार से न तो श्राद्ध हो सकता है और न ही किया जाना चाहिये। हां जीवित माता-पिता व पितर आदि की सेवा-सुश्रुषा के द्वारा उनका श्राद्ध नियमित व प्रतिदिन करना चाहिये। यही विज्ञान सम्मत है व भारतीय संस्कृति है और यही सत्य व शास्त्रों से भी सम्पुष्ट हैं। यदि किसी प्राचीन व एक शताब्दी या दो शताब्दी ी पुरानी पुस्तक में धर्म सम्बन्धी अच्छी बातों के साथ तर्क हीन, वेदविरूद्ध व अवैज्ञानिक एवं अविवेकपूर्ण बातें लिखी हों तो वह विष सम्पृक्त अन्न के समान त्याज्य कोटि के ग्रन्थों में परिगणित होता है और होना भी चाहिये।

उपर्युक्त विवेचन से धर्म का वास्तविक रूप सामने आ गया है। आईये अब 'श्राद्ध' शब्द का भी विवेचन करते हैं। श्राद्ध शब्द कुछ कर्मों या क्रियाओं का द्योतक है। श्रद्धा एक गुण है जो सत्य में दृढ़ आस्था, निष्ठा, समर्पण व संकल्प को अन्तर्निहित किए हुए है। कोई भी कार्य यदि सत्य पर आधारित है और आस्था, निष्ठा व संकल्प के साथ किया जाता है तो वह स्वयं में श्राद्ध का कार्य है। माता, पिता व आचार्यों का सन्तानों व शिष्यों पर सबसे अधिक ऋण है। माता-पिता मुख्यतः जन्म, ज्ञान, शिक्षा, संस्कार देने व पालन-पोषण करने व आचार्य शिक्षा व संस्कार देने के कारण पूज्य हैं। इनकी सेवा पूरी श्रद्धा-भक्ति एवं तन-मन-धन से सभी सन्तानों व शिष्यों को करनी चाहिये। माता-पिता व आचार्य अपनी सन्तानों व शिष्यों से क्या अपेक्षा करते हैं?वह अपेक्षा करते हैं कि उनका आदर-सत्कार, भोजन, वस्त्र, धन, सेवा, चिकित्सा या ओषधि प्रदान करना आदि कार्य उनकी सन्तानें व शिष्यगण करें। बस यही 'श्राद्ध' है। इन कार्यों में सत्य है एवं यह वेदों से पूर्णतया समर्थित है। किसी मत व सम्प्रदाय का इन बातों से कहीं विरोध नहीं है। आज जो सेवा करेगें तो कल वह भी, आज के युवा, वृद्ध व निर्बल होने पर सेवा व सहायता के पात्र होगें और उन्हें दूसरों से अपनी सेवा-सत्कार की आवश्यकता होगी। इस श्राद्ध अर्थात् पितृ-यज्ञ की परम्परा से वर्तमान के जीवित माता-पिताओं व आचार्यों को तृप्ति व सन्तुष्टि मिल रही है एवं इस परम्परा से भावी जीवित माता-पिताओं व आचार्यों को भी सेवा आदि का लाभ होगा। कोई इससे छूटेगा या बचेगा नहीं। सेवा करवाने वाले सेवा करने वालों के प्रति अनुग्रहित होते हैं और उन्हें अपना ज्ञान, अनुभव व विरासत एवं धन-सम्पत्ति एवं सबसे बड़ी चीज आर्शीवाद देते हैं। आशीर्वाद बहुत बड़ी चीज है जो पैसों से खरीदी नहीं जा सकती एवं केवल श्रद्धा, सेवा व सच्चा प्रेम प्रदर्शित करने आदि से ही प्राप्त होती है। सत्पुरूषों का आशीर्वाद अवश्य फलीभूत होता है। इसमें हमारे शास्त्रों की साक्षी भी है और अनुभव से भी यह बात सत्य सिद्ध हुई है। अतः श्राद्ध मनुष्य जाति के लिए परम आवश्यक करणीय सामाजिक एवं धार्मिक कार्य है। यह सेवा-श्राद्ध आदि हम केवल जीवित लोगों का ही कर सकते हैं। अतः आईये अब विचार करते हैं कि क्या मृतक को श्राद्ध से कोई लाभ होता है या यह केवल अज्ञान व स्वार्थो पर ही आधारित है।

अतः बुद्धि विरूद्ध, ज्ञान विरूद्ध, वेद विरूद्ध, विना स्वयं परीक्षा किए किसी भी बात को नहीं मानना चाहिये। सत्य के ग्रहण करने एवं असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। प्रत्येक कार्य सत्य व असत्य को विचार करके करने चाहिये। अविद्या का नाश एवं विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। सत्य को ग्रहण किए बिना व आचरण में लाए बिना किसी मनुष्य या पूरी मनुष्य जाति की उन्नति नहीं हो सकती। मनुष्यों को केवल भौतिक उन्नति में ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये अपितु ईश्वरोपासना, यज्ञ, स्वाध्याय, सेवा व सत्संग आदि से आध्यात्मिक पूंजी अर्जित करनी चाहिये जो जन्म-जन्मान्तर में साथ जाती है और अभ्युदय व निःश्रेयश की सिद्धि कराती है।

हमने अपने माता-पिता को देखा है। उन्होंने हमें जन्म देने के साथ, शिक्षा, संस्कार दिये और हमारा पालन-पोषण किया। गुरूओं व आचार्यों ने हमें ज्ञान व शिक्षा दी। आज हमारे माता-पिता जीवित नहीं है। दादी-दादाजी भी नहीं है और उनसे पहले की पीढ़ियां भी नहीं है। अनेक आचार्य भी परलोक गामी हो चुकें हैं। जब वह जीवित थे तो हम उन्हें 'नमस्ते' के अभिवादन से सम्मान देते थे। अब नहीं हैं तो नहीं दे सकते। मरने के बाद शास्त्रों एवं विज्ञान की मान्यताओं के अनुसार मृतक व्यक्तियों एवं उनकी आत्माओं से मिलना असम्भव है। मृत्यु के पश्चात उनके कर्मानुसार उनका पुनर्जन्म हो जाता है। हमारी भी इस जन्म से पूर्व मनुष्य अथवा किसी अन्य योनि में जीवन व जन्म था। वहां मृत्यु हो जाने पर हमें यह जीवन व जन्म मिला। अब मृत्यु होने पर पुनर्जन्म अवश्यम्भावी है। यह हमें स्वाध्याय से अर्जित ज्ञान व विवेक से ज्ञात हुआ है। मरे हुओं को हम भोजन या वस्त्र आदि, किसी या किन्हीं भी साधनों से, नहीं पहुंचा सकते और न हि मरे हुओं को इन सब चीजों की कुछ भी आवश्यकता होती है। यह वस्तुएं जीवित शरीर की आवश्यकतायें हैं न कि आत्मा की। अतः मरें हुओं का श्राद्ध युक्तिसंगत नहीं है। वेदों में, जो धर्म के मूल, संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ, ईश्वरीय ज्ञान व धर्मशास्त्र हैं, उनमें मृतकों के लिए किसी भी कर्तव्य का विधान नहीं है। क्योंकि न तो मृतक को आवश्यकता है और न हि हम उन्हें कुछ पहुंचा सकते हैं। अतः धर्म के नाम पर मृतकों का श्राद्ध करना उचित नहीं ठहरता। हां जीवित माता-पिता व आचार्यो का श्राद्ध किया जाना चाहिये जैसा कि उपुर्यक्त पंक्तियों में विवेचन किया गया है। मरें हुए व्यक्तियों के हम ऋणी हैं और उन्हें चुकाने के लिए हमें शास्त्रानुसार कर्तव्य करना है। शास्त्रों के अनुसार हमारे ऊपर 3 ऋण है। ऋषि ऋण, देव ऋण और पितृ ऋण। सृष्टि के आरम्भ से अब तक हुए ऋषियों, आचार्यों व विद्वानों, जो दिवंगत हो चुकें हैं, के ऋण को चुकाने के लिए हमें वर्तमान के ऋषियों, विद्वानों व सच्चे आचार्यो का सम्मान करना है व उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखना है। इसी के साथ प्राचीन ऋषि-मुनियों की विरासत के रूप में जो वेद, सत्य, विज्ञान व तर्क सम्मत बौद्धिक सम्पदा उपलब्ध है उसके शोधपूर्ण सम्पादन व प्रकाशन, स्वाध्याय, अनुशीलन, व्याख्यान-प्रवचन व अनुसंधान एवं शोध द्वारा उनकी रक्षा व सम्पुष्टि आदि का कार्य भी उन ऋषियों के ऋण से उऋण होने के लिए श्राद्ध के रूप में हमें करने हैं। यदि हम ऐसा नहीं करेगें तो वह साहित्य नष्ट हो जायेगा जिससे हमारा धर्म व संस्कृति भी सुरक्षित नहीं रह सकेगी। आज जो धर्म व संस्कृति का ह्रास व अवमूल्य हुआ है उसका कारण भी हमारा वेदों व वैदिक साहित्य का उचित रीति से अध्ययन-अध्यापन द्वारा संरक्षण न कर उससे भिन्न सरल व सहज मार्गो का अवलम्बन है। देव ऋण के लिए माता-पिता-आचार्यो को सदैव जीवन भर अपनी सेवा व आदर-सम्मान से सन्तुष्ट रखना है। जड़ देवों पृथिवी, अग्नि, जल, वायु एवं आकाश की पूजा के अन्तर्गत उनका न्यूनतम उपभोग करते हुए पर्यावरण को प्रदूषित नहीं होने देना है। यथा-सम्भव व अधिकाधिक अग्निहोत्र यज्ञ करके वायु, जल, पृथिवी व आकाश आदि को शुद्ध व पवित्र रखना है। पितृ ऋण के अन्तर्गत भी माता-पिता, ऋषि एवं आचार्यो की ही सेवा-सुश्रुषा एवं सेवा-भक्ति से उन्हें प्रसन्न व सन्तुष्ट रखना है जिससे वह पूर्णतः तृप्त रहें। यही माता-पिता-आचार्य, दादा-दादी व परदादा-परदादी एवं ऋषियों आदि का श्राद्ध एवं तर्पण है।

हमारे विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मृतकों को भोजन व वस्त्र आदि की आवश्यकता नहीं है। अतः उनका किसी प्रकार से न तो श्राद्ध हो सकता है और न ही किया जाना चाहिये। हां जीवित माता-पिता व पितरों यथा विद्वान, आचार्यो, योगियों, समाज के सम्मानित व्यक्तियों आदि की, उनके प्रति आदर-सम्मान की भावना एवं सेवा-सुश्रुषा के द्वारा, उनका श्राद्ध नियमित व प्रतिदिन करना चाहिये। यही वैज्ञानिक व भारतीय संस्कृति है और यही सत्य, विज्ञान व शास्त्रों से भी सम्पुष्ट हैं। यदि किसी प्राचीन व एक शताब्दी या दो शताब्दी ी पुरानी पुस्तक में धर्म सम्बन्धी अच्छी बातों के साथ तर्क हीन, वेद-विरूद्ध व अवैज्ञानिक एवं अविवेकपूर्ण बातें लिखी हुई हों तो वह विष सम्पृक्त अन्न के समान त्याज्य कोटि के ग्रन्थों में परिगणित होते हैं और होने ही चाहिये क्योंकि इससे मानव जाति को कोई लाभ तो होता नहीं अपितु हानि होती है। यदि किसी ग्रन्थ व पुस्तक में मृतकों के श्राद्ध का विधान है तो दो बातें हो सकती हैं, पहला - वह कथन मूल ग्रन्थकार का न होकर प्रक्षिप्त हो या दूसरा, ग्रन्थकार ने अपने किसी स्वार्थ, अज्ञान व अविवेक के कारण उसका विधान किया हो। ऐसा भी देखने को मिलता है कि कई अज्ञान व स्वार्थी लोगों ने प्राचीन ऋषियों मुनियों के नाम से ग्रन्थ बनायें हैं। उनका प्रयोजन यह रहा है कि ऋषियों मुनियों के नाम से वह समाज में आदर पा जायेगें और अतीत में ऐसा ही हुआ भी है। अतः बुद्धि विरूद्ध, ज्ञान विरूद्ध, वेद विरूद्ध, बिना स्वयं परीक्षा किए किसी भी बात को नहीं मानना चाहिये। इसकी क्रम में यह कहना भी समीचीन है कि वेद में मृतक पितरों के श्राद्ध का विधान नहीं है। अनेक पुराणों में इसका विधान बताया जाता है। अब यह देखना है कि वेद प्रमुख हैं या कि पुराण?वेदों को राम, सीता, कृःण, द्रोणाचार्य, वेदव्यास आदि मानते रहे हैं। अतः स्वाभाविक है कि वेद मुख्य हैं और इन्हें कदापि नहीं छोड़ा जा सकता। पुराणों की बात परवर्ती एवं मिथ्या सिद्ध है, अतः इसी को छोड़ना है। मृतकों के श्राद्ध का पुराणों व अन्यत्र विधान सभी शास्त्रों द्वारा समर्थित पुनर्जन्म के सिद्धान्त के भी विरूद्ध है। जब मृतक आत्मा का पुनर्जन्म हो जाता है तो फिर उसे अपनी योनि का भोजन मिलता ही है जैसा कि हम वर्तमान में भिन्न-भिन्न योनि के प्राणियों को भोजन करते हुए देखते हैं। अतः मृतकों का श्राद्ध करना अनावश्यक एवं ज्ञानहीन कृत्य है। ऐसा करके कोई पुण्यार्जन नहीं होता। पुनर्जन्म शास्त्रीय प्रमाणों के अतिरिक्त युक्तियों व यत्र-तत्र होने वाली घटनाओं से भी सिद्ध है। अतः मृतक श्राद्ध असत्य, अनावश्यक, अशास्त्रीय, आप्त प्रमाण विहीन व विरूद्ध सिद्ध हो गया है।

सत्य के ग्रहण करने एवं असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। प्रत्येक कार्य सत्य व असत्य को विचार करके करने चाहिये। अविद्या का नाश एवं विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। सत्य को ग्रहण किए बिना व आचरण में लाए बिना किसी मनुष्य या पूरी मनुष्य जाति की उन्नति नहीं हो सकती। मनुष्यों को केवल भौतिक उन्नति में ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये अपितु ईश्वरोपासना, यज्ञ, स्वाध्याय, सेवा व सत्संग आदि से आध्यात्मिक पूंजी अर्जित करनी चाहिये जो जन्म-जन्मान्तर में साथ जाती है और अभ्युदय व निःश्रेयश की सिद्धि कराती है। हम ईश्वरोपासना में ईश्वर के निकट रहते हैं जिससे दुःख व मुसीबतें हमसे दूर रहती हैं। सुख-शान्ति से जीवन बीतता है। आईये मृतक श्राद्ध की वास्तविकता जान लेने पर जीवित माता-पिता व पितरों के प्रतिदिन श्राद्ध को अपने जीवन का अंग बना लें।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001,दूरभषः 09412985121,

॥ ओ३म् ॥

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 34वें वार्षिकोत्सव पर

सानिध्य : स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्ममुनि जी
आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व व डॉ. अशोक कु. चौहान की अध्यक्षता में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

25, 26, 27 जनवरी 2013 (शुक्र, शनि व रविवार)

रामलीला मैदान, अशोक विहार, फेज-1, दिल्ली (निकट कन्हैया नगर मैट्रो स्टेशन)

आर्यो की शोभा यात्रा, शुक्रवार 25 जनवरी, 2013, प्रात: 10 बजे

शुभारम्भ : रामलीला मैदान से चलकर वाया मोन्टफोर्ट स्कूल, ब्लाक IA, F, Taxi Stand, दीप मोड़, सी-2, सत्यवती कॉलेज मोड़, बी-2, वजीरपुर डैंकी होते हुए वापस समारोह स्थल पर दोपहर 1.00 बजे समापन।

संयोजक : सर्वश्री देवेन्द्र भगत, के.बी.गुप्ता, शान्तिलाल आर्य, काशीराम शास्त्री, यज्ञवीर चौहान, वेदप्रकाश आर्य, शिशुपाल आर्य, सुरेश आर्य, संतोष शास्त्री, ओमबीर सिंह, गवेन्द शास्त्री, योगेन्द्र शास्त्री, सौरभ गुप्ता, वीरेश आर्य, रविन्द्र मेहता, प्रवीन आर्य, डॉ. मुकेश आर्य, एस.पी.सिंह, राकेश जैन, वेदपाल आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, श्रीकृष्ण दहिया, स्वतंत्र कुकरेजा, वेदप्रकाश शास्त्री, ब्र.दीक्षेन्द्र।

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री, राजीव कुमार 'परम', डा० डी.के.गर्ग, जितेन्द्र नरुला

शुक्रवार 25 जनवरी, 2013

यज्ञ	:	प्रात: 8.30 से 9.30
विराट शोभा यात्रा	:	प्रात: 10.00 से 1.00
वेद-संस्कृत रक्षा सम्मेलन	:	दोपहर 2.30 से 5.30
भव्य संगीत संध्या	:	रात्री 7.00 से 9.30
		श्री नरेन्द्र आर्य ''सुमन''
		श्री एस.एस.गुलशन (जालंधर)

शनिवार 26 जनवरी, 2013

101 कुण्डीय विराट् यज्ञ	:	प्रात: 8 से 10
ध्वजारोहण	:	प्रात: 10.30 बजे
राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	:	11.00 से 2.00
आर्य महिला सम्मेलन	:	2.30 से 5.00
व्यायाम शक्ति प्रदर्शन	:	5.00 से 6.30
राष्ट्रीय कवि सम्मेलन	:	7.00 से 10.00

रविवार 27 जनवरी, 2013

151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	:	प्रात: 8 से 10.30
ध्वजारोहण	:	प्रात: 11.00 बजे
राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	:	11.30 से 2.30
शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन	:	2.45 से 5.30
कार्यकर्ता सम्मान समारोह	:	5.30 से 6.00
धन्यवाद एवम् शांतिपाठ समापन	:	सांय 6.15 बजे

हजारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

दानी महानुभावों की सेवा में अपील - इस महायज्ञ में उदारतापूर्वक तन-मन-धन से सहयोग दें। ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, घी, सब्जी, मसाले इत्यादि से सहयोग करें। कृपया समस्त धनराशि क्रॉस चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से मुख्य कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने का समय व अपनी संख्या के बारे में 13 जनवरी, 2013 तक सूचित करने की कृपा करें, जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु, आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 13 जनवरी तक आरक्षित करवा लें।

प्रात: से रात्रि तक निरन्तर 'ऋषि लंगर' का सुन्दर प्रबन्ध रहेगा

निवेदक

डा० अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष
महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय महामंत्री
दुर्गेश आर्य
राष्ट्रीय मंत्री
राकेश भटनागर
राष्ट्रीय मंत्री
धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

यशोवीर आर्य
रामकुमार सिंह
सत्यभूषण आर्य
विश्वनाथ आर्य
कृष्णचन्द पाहूजा
मनोहरलाल चावला
आनन्दप्रकाश आर्य
रामकृष्ण शास्त्री
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

आनन्द चौहान
दीपक भारद्वाज
अरूण बंसल
अविनाश बंसल
प्रदीप तायल
राममेहर सिंह
मुंशीराम सेठी
प्रि० अन्जु महरोत्रा
स्वागत अध्यक्ष

मायाप्रकाश त्यागी
सत्यपाल गांधी
रवि चड्डा
रामलुभाया महाजन
डॉ. वीरपाल विद्यालंकार
ओम व प्रमोद सपरा
ब्रह्मप्रकाश मान
डॉ.ओमप्रकाश मान
स्वागत समिति

डॉ.सुन्दरलाल कथूरिया
रामकृष्ण सतीजा
के.एस.यादव
रंजन आनन्द
सुरेन्द्र कोहली
प्रेमपाल शास्त्री
दुर्गाप्रसाद कालरा
माता स्वर्णा गुप्ता
स्वागत समिति

आयोजक: सर्वश्री जितेन्द्र डावर, चत्तरसिंह नागर, सुरेन्द्र गुप्ता, शशिभूषण मल्होत्रा, कांतिप्रकाश आर्य, विमला ग्रोवर, सत्यानन्द आर्य, सरोज भाटिया, सुरेन्द्र शास्त्री, प्रभा सेठी, अर्चना पुष्करणा, शीला ग्रोवर, गायत्री मीना, कै.अशोक गुलाटी, लक्ष्मी सिन्हा, रचना आहूजा, उर्मिला आर्या, सुमन नागपाल, सोमनाथ आर्य, पुष्पलता वर्मा, आदर्श सहगल, सुदेश अरोड़ा, सुदर्शन खन्ना, सत्यवीर पसरीचा, आत्मप्रकाश कालरा, वीरेन्द्र आहूजा, पीताम्बर बाली, के.के.सेठी।

आयोजक : केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी०)

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-7, दूरभाष : 9810117464, 9958889970, 9013137070

E-mail : aryayouth@gmail.com, dkbhagat@gmail.com visit us : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज दिलशाद गार्डन व आर्य समाज अशोक विहार-3 का उत्सव सम्पन्न

रविवार 2 दिसम्बर 2012, आर्य समाज दिलशाद गार्डन, पूर्वी दिल्ली का वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के संरक्षक श्री सोमदेव कथूरिया का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य, श्री महेन्द्र भाई, श्री जवाहर भाटिया (प्रधान), श्री सुरेश मुखीजा, श्रीमती सरोज भाटिया व समारोह अध्यक्ष श्री यशोवीर आर्य। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, अशोक विहार, फेज-3 दिल्ली में मुख्य अतिथि सांसद श्री इन्दर सिंह नामधारी पुस्तक का विमोचन करते हुए। साथ में श्री विमल वधावन एडवोकेट, श्रीमती गायत्री योगाचार्या, श्री वेदमित्र अग्रवाल, श्री सतीश चोपड़ा व डॉ. अनिल आर्य। श्रीमती प्रेम सब्बरवाल ने समारोह का कुशल संचालन किया। श्री विजय भूषण, श्रीमती सुदेश आर्या, आर्य तपस्वी सुखदेव ने उद्बोधन दिया।

पानीपत में प्रान्तीय बैठक व मेरठ में स्वामी विवेकानन्द जी का स्वागत

रविवार 2 दिसम्बर 2012, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, हरियाणा की प्रान्तीय कार्यकर्त्ता बैठक आर्य कॉलेज पानीपत में प्रान्तीय अध्यक्ष श्री मनोहर लाल चावला की अध्यक्षता में सौल्लास सम्पन्न हुई। बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य के साथ सर्वश्री मनोहर लाल चावला, हरबंस लाल अरोड़ा, वीरेद्र योगाचार्य, योगेन्द्र शास्त्री, हरिचन्द स्नेही, रामकुमार सिंह, बलजीत सिंह आर्य, सत्य भूषण आर्य, स्वतंत्र कुकरेजा, कमल आर्य, महावीर सिंह आर्य, अजय गुप्ता, रामचन्द्र, अर्जुन देव, ईश कुमार आर्य, नवनीत सिंघला, रणबीर सिंह आर्य, सुशील सिंघल, गुलशन लाल निझावन, वेद प्रकाश शास्त्री आदि। द्वितीय चित्र में शनिवार 8 दिसम्बर 2012 को आर्य समाज थापर नगर, मेरठ में स्वामी विवेकानन्द जी का स्वागत करते डॉ. अनिल आर्य, मन्त्री श्री राजेश सेठी व कै. अशोक गुलाटी।

आचार्य आनन्द पुरूषार्थी व श्री कृष्ण दहिया का अभिनन्दन

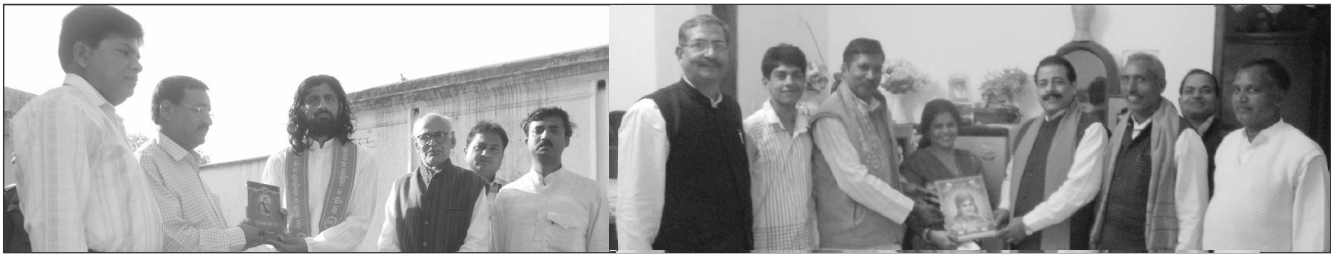

दिनांक 27 नवम्बर 2012 को पूर्वी उत्तर प्रदेश की हमीरपुर जिला जेल में वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री आनन्द पुरूषार्थी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ। इस अवसर पर आचार्य जी का अभिनन्दन करते जेल अधीक्षक श्री दोहरे जी, लक्ष्मी शंकर, विवेक आर्य आदि। द्वितीय चित्र में जींद में आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती बलेस देवी व श्री कृष्ण दाहिया का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य, श्री महेन्द्र भाई, श्री सूर्य देव व्यायामाचार्य, सतवीर दहिया आदि।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान के कार्यक्रम

1. आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली: मंगलवार 25 दिसम्बर 2012 को प्रात: 10 बजे विशाल शोभा यात्रा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली से प्रारंभ होगी तथा दोपहर 1 बजे 4 बजे तक सार्वजनिक सभा रामलीला मैदान, अजमेरी गेट में सम्पन्न होगी। **- महाशय धर्मपाल, प्रधान (MDH)**
2. आर्य केन्द्रीय सभा, गाजियाबाद: रविवार 23 दिसम्बर 2012 को प्रात: 11 बजे विशाल शोभा यात्रा शंभु दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद से प्रारम्भ तथा दोपहर 2 बजे 4 बजे तक विशाल जनसभा श्री सनातन धर्म इण्टर कॉलेज, अम्बेडकर रोड, गाजियाबाद मे। **- प्रवीण आर्य, महामन्त्री**
3. गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय ख्वाजा, फरीदाबाद में रविवार 23 दिसम्बर 2012 को प्रात: 9 से 1 बजे तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जाएगा।

-सत्यभूषण आर्य, एडवोकेट, संयोजक

पं. हरिदेव आर्य वीर की पुण्य स्मृति पर सत्संग

माता सुशीला हरिदेव आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट के तत्वावधान में भव्य वैदिक सत्संग, रविवार 30 दिसम्बर 2012, सायं 4 से 7 बजे तक, वेद मन्दिर नगर आर्य समाज, मोहल्ला महाराम डूंगर, शाहदरा, दिल्ली में मनाया जायेगा। वैदिक विद्ववान डॉ. जयेन्द्र आचार्य के प्रवचन एवं आचार्य श्री महेन्द्र भाई यज्ञ के ब्रह्मा होगें। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर अवश्य ग्रहण करें।

निवेदक: यशोवीर आर्य, मन्त्री, डॉ. अनिल आर्य, संयोजक

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्रीमती गीता खुराना (सुपुत्री श्री बलदेव राज सेठ) का गत दिनो निधन हो गया।
2. श्रीमती राजरानी बत्रा (माता श्रीमती शान्ता तनेजा) का गत दिनो निधन हो गया।
3. श्रीमती कुसुम लता राव (बहन स्वामी अग्निवेश जी) का गत दिनो निधन हो गया।
4. श्रीमती वेद मक्कड़ (धर्मपत्नी श्री कस्तुरी लाल मक्कड़) का गत दिनो निधन हो गया।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970